

यहाँ से काटिए

प्रश्न पत्र को खोलने के लिए यहाँ फाड़ें

यहाँ से काटिए

Sl.No. :

नामांक	Roll No.

No. of Questions – 23

VU-55-Samanya Dar.

No. of Printed Pages – 7

**वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, 2023**

**VARISHTHA UPADHYAYA EXAMINATION, 2023**

**सामान्य दर्शनम्**

समय : 3 घण्टे 15 मिनट

पूर्णांक : 80

**परीक्षार्थिभ्यः सामान्यनिर्देशाः**

- 1) परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामाङ्कः अनिवार्यतः लेख्यः।
- 2) सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
- 3) सर्वेषां प्रश्नानामुत्तराण्युत्तरपुस्तिकायामेव लेखनीयानि।
- 4) एकस्य प्रश्नस्य सर्वे भागाः एकत्र एव लेखनीयाः।
- 5) सर्वे प्रश्नाः संस्कृतमाध्यमेन उत्तरणीयाः।

खण्ड - अ

- 1) i) पातञ्जलयोगसूत्रानुसारं सार्वभौमचित्तस्य धर्मः कः? [1]  
 अ) वैराग्यम् ब) योगः  
 स) कामः द) वितर्कम्
- ii) चित्तभूमिषु इयं नास्ति? [1]  
 अ) क्षिप्तम् ब) मूढम्  
 स) विक्षिप्तम् द) कामना
- iii) सर्वशब्दाग्रहणात् कः योगः इत्याख्यायते? [1]  
 अ) सम्प्रज्ञातः ब) असम्प्रज्ञातः  
 स) समाधिः द) चित्तवृत्तिः
- iv) कः दीर्घकालनैरन्तर्ध सत्कारासेवितः दृढभूमिः? [1]  
 अ) जिज्ञासा ब) अभ्यासः  
 स) वैराग्यम् द) समाधिः
- v) स च पुरुषविशेषः कः? [1]  
 अ) प्रधानम् ब) आनन्दः  
 स) ईश्वरः द) भोक्ता
- vi) स हि क्रियायोगः किंमर्थम्? [1]  
 अ) समाधिभावनार्थम् ब) भोगैश्वर्यार्थम्  
 स) क्रीडार्थम् द) मायार्थम्
- vii) दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मता का? [1]  
 अ) अविद्या ब) अस्मिता  
 स) समाधिः द) प्रज्ञा
- viii) अविद्यादयःके? [1]  
 अ) पञ्चयमाः ब) अष्टाङ्गानि  
 स) पञ्च क्लेशाः द) पञ्चमहाभूतानि

- ix) अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः के? [1]  
 अ) नियमाः ब) यमाः  
 स) क्लेशाः द) आसनानि
- x) जन्तूनां किं दुर्लभम्? [1]  
 अ) राक्षसयोनिः ब) पशुयोनिः  
 स) नरजन्म द) वृक्षयोनिः
- xi) शतकोटिजन्मसुकृतैः पुण्यैर्विना किं लभ्यते? [1]  
 अ) क्षमा ब) ज्ञानम्  
 स) मुक्तिः द) शान्तिः
- xii) देवानुग्रहेतुकेषु दुर्लभत्रयेषु इदं नास्ति? [1]  
 अ) मनुष्यत्वं ब) मुमुक्षुत्वं  
 स) ऐश्वर्यं द) महापुरुषसंश्रयः

2) रिक्तस्थानानि पूरयत -

- i) ..... हि प्रख्या प्रवृत्ति स्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्। [1]
- ii) ..... स योगश्चित्तवृत्ति निरोध इति । [1]
- iii) दुःखानुशयी ..... । [1]
- iv) अस्तेयप्रतिष्ठायां ..... । [1]
- v) यस्त्वात्ममुक्त्यै न यतेत ..... स ह्यात्महास्वविनिहन्त्य सद्ग्रहात्। [1]
- vi) स्वलक्ष्ये नियतावस्था मनसः ..... उच्यते। [1]

3) अति लघूत्तरात्मकप्रश्ना :-

- |   |     |
|---|-----|
| i) योग-शब्दस्य व्युत्पत्तिः प्रदर्शनीया ?         | [1] |
| ii) पातञ्जलयोगसूत्रानुसारं प्रथमं सूत्रं किम् ?   | [1] |
| iii) राजमार्तण्डवृत्तिः कस्याः वृत्तेः अपरं नाम ? | [1] |
| iv) योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः इत्यत्र चित्तं किम् ?  | [1] |
| v) अम्यासस्य लक्षणं किम् ?                        | [1] |
| vi) वितर्कस्य लक्षणं किम् ?                       | [1] |
| vii) सम्प्रज्ञात समाधिः कतिविधः ?                 | [1] |
| viii) क्लिष्टाऽक्लिष्टाः वृत्तयः कति ?            | [1] |
| ix) ईश्वर प्रणिधानं किम् ?                        | [1] |
| x) के पञ्चप्राणाः ?                               | [1] |
| xi) बुद्धीन्द्रियाणि कानि ?                       | [1] |
| xii) शमादिषट्कं किम्                              | [1] |

- 4) 'सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्' सूत्रस्य भोजवृत्तिं लिखत। [2]
- 5) किं नाम भवप्रत्ययः? [2]
- 6) व्याधेर्लक्षणं किम्? [2]
- 7) संशयः कः? [2]
- 8) विक्षेपसहमुवः के? [2]
- 9) 'तस्य वाचकः प्रणवः' इत्यस्य भोजवृत्तिं लिखत। [2]
- 10) दग्धबीजीकरणं किम्? [2]
- 11) दर्शनज्ञानं कैवल्यकारणं कथम्? [2]
- 12) ब्रह्मचर्यं किम्? भोजवृत्त्यानुसारं लिखत। [2]
- 13) स्वाध्यायः कः? [2]
- 14) हिंसां कतिविधा? काश्च ताः? [2]
- 15) ब्रह्मजिज्ञासायोग्यता का? [2]
- 16) श्रद्धा का? [2]

खण्ड – स

- 17) गोविन्द पदव्युत्पत्तिं प्रदर्शयन्त ग्रन्थदिशा मङ्गलाचरणं स्पष्टयत। [3]
- 18) मुमुक्षुत्वं स्वपाठ्यग्रन्थदिशा स्पष्टयत। [3]
- 19) 'ब्रह्मवित्तमः गुरुः' स्यात् वाक्यं स्पष्टयत। [3]
- 20) 'सूक्ष्माणि भूतानि भवन्ति तानि' इति श्लोकांशं स्पष्टयत। [3]

खण्डः – द

- 21) कस्यचिदेकस्य श्लोकस्य स्वपाठ्य ग्रन्थानुसारं व्याख्या कार्या।- [4]

अस्त्युपायो महान्कश्चित्संसारभयनाशनः।

तेन तीर्त्वा भवाम्भोधिं परमानन्दमाप्स्यसि॥

अथवा

वेदान्तार्थविचारेण जायते ज्ञानमुत्तमम्।

तेनात्यन्तिकसंसार दुःखनाशो भवत्यनु॥

22) पद्ययोरेकस्य भावार्थं स्वपाठ्यग्रन्थानुसारं विशदयत।

[4]

वाग्वैखरी शब्द झरी शास्त्रव्याख्यानकौशलम्।

वैदुष्यं विदुषां मध्ये मुक्तये न तु मुक्तये॥

अथवा

वीणाया रूपसौन्दर्यं तन्त्रीवादनसौष्टवम्।

प्रजारञ्जनमाश्रं तन्न साम्राज्याय कल्पते॥

23) संसारप्रपञ्चस्य मिथ्यात्वं विवेकचूडामणोरनुसारं लिखत।

[4]

अथवा

अद्वैत ब्रह्मस्वरूपं स्वपाठ्यग्रन्थदिशा स्पष्टयत।



**DO NOT WRITE ANYTHING HERE**